पिता में श्रद्धा
माँ में टान,
वह लड़का हो
साम्यप्राण।।

श्री श्री ठाकुर

जितनी अटूट
मातृभक्ति,
वह लड़का हो
उतना कृति।

श्री श्री ठाकुर

सबको बचाना अपने बचना,

उसको ही तू धर्म समझना।

धर्म में सभी बचते बढ़ते,

सम्प्रदाय को धर्म न कहते॥

श्री श्री ठाकुर

टका पराया,

मानुष अपना।

जितना हो,

मानुष को धरना।।

श्री श्री ठाकुर

यजन याजन
इष्टभृति
करने से कटे
महाभिति ।।

सब धर्मों में श्रेष्ठ धर्म,

पुरुषोत्तम का शरण ग्रहण।

चाह सफल होगी उसमें ही,

सब पापों का जिसमें मोचन॥

श्री श्री ठाकुर

मौखिक ज्ञान,
नहीं व्यवहार।
वैसी शिक्षा
को धिक्कार।।

श्री श्री ठाकुर

शिक्षक को नहीं
इष्ट में टान ।
कौन जगावे
छात्र प्राण॥

श्री श्री ठाकुर

पुरुषोत्तम होते सबके गुरु,
सबके धाता पूर्यमाण।
धृतिचर्य्यी हैं वे ही सबके
भजनमूर्त भगवान।।

श्री श्री ठाकुर

बचने बढ़ने का मर्म जो ,
ठीक जानो धर्म वो ।

श्री श्री ठाकुर

बिना किये
जो पाना चाहे।
दुःख तो उसके
पीछे धाये।।

श्री श्री ठाकुर

पुरुषोत्तम आते हैं जिस क्षण,
सब गुरु की ही सार्थकता।
उनको धरने से होती नहीं,
गुरुत्याग की घृण्यकथा।।

श्री श्री ठाकुर

जीवन का उद्‌देश्य है अभाव को मिटा देना और वह केवल कारण को जानने से ही हो सकता है।

श्री श्री ठाकुर

अभाव से परिश्रांत मन ही धर्म या ब्रह्म-जिज्ञासा करता है, अन्यथा नहीं करता।

श्री श्री ठाकुर

किसी के दुःख का
कारण न बनो,
कोई तुम्हारे दुःख का
कारण नहीं बनेगा।

श्री श्री ठाकुर

चाह की अप्राप्ति ही
है दुःख! कुछ भी न चाहो।
सभी अवस्थाओं में राजी रहो,
दुःख तुम्हारा क्या करेगा?

श्री श्री ठाकुर

धर्म को जानने का अर्थ है, विषय के मूल कारण को जानना। और वही जानना ज्ञान है।

श्री श्री ठाकुर